

हिंदी गज़ल में समाज की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति

निरूपमा तिवारी
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग

एस0एस0जे0राजरीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, स्याल्दे
जिला-अल्मोड़ा, उत्तराखंड, भारत

सारांश: गज़ल साहित्य की एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली काव्य विधा है जो अपने संक्षिप्तता, भाव गंभीरता तथा अभिव्यक्ति की सघनता के कारण विशेष महत्व रखती है। यह शोध पत्र हिंदी गज़ल में समाज की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति का अध्ययन प्रस्तुत करता है। गज़ल जो अरबी फारसी परंपरा से विकसित होकर हिंदी में स्थापित हुई है, एक सशक्त काव्य विधा के रूप में मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने में सक्षम रही है। इस अध्ययन का उद्देश्य गज़ल की संरचना उसके प्रमुख अंगों शेर, मतला, कफिया एवं रदीफ के साथ-साथ उसके विकास एवं स्वरूप का विश्लेषण करना है। शोध में विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग द्वारा किये गये अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी गज़ल ने समय के साथ अपने विषय-विस्तार में परिवर्तन करते हुए प्रेम एवं श्रृंगार के सीमित दायरे से निकाल कर सामाजिक, राजनीतिक एवं मानवी समस्याओं को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त किया है। समकालीन हिंदी गज़लकारों ने समाज के विसंगतियों, पीड़ा, संघर्ष तथा आम जनजीवन की समस्याओं को अपनी रचनाओं में प्रमुखता से स्थान दिया है। इस प्रकार हिंदी गज़ल आज समाज के संवेदनात्मक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरती है।

कुंजी शब्द- गज़ल, हिन्दी गज़ल, समाज, संवेदना,

आज हिंदी गज़ल किसी परिचय का मोहताज नहीं है। गज़ल साहित्य की वह विधा है जो यूगीन चेतना को प्रकट करने में सर्वाधिक सफल रही है। केवल दो पंक्तियों में जीवन के कड़वे सत्य का अनुभव कर देने की क्षमता जिस विधा में पाई जाती है उसे गज़ल कहा गया है। वास्तव में गज़ल बहुत ही पुरानी विधा है। ऐसा माना जाता है कि इसकी शुरुआत 15 सौ साल से भी अधिक वर्ष पूर्व अरबी भाषा में हुई थी। यह सर्व विदित है कि गज़ल ने अरबी से फारसी, फारसी से उर्दू और उर्दू से अन्य भारतीय भाषाओं के साथ-साथ हिंदी में प्रवेश किया है। अरबी भाषा में गज़ल शब्द का अर्थ है प्रेमिका से वार्तालाप। वहीं फारसी भाषा के अंतर्गत गज़ल शब्द का अर्थ है मृगनयनी। इसके अलावा कुछ लोगों का यह भी मानना है की गज़ल अरबी भाषा का एक स्त्रीलिंग शब्द है जिसका अर्थ है प्रेमिका और प्रेमी की बातचीत। इस प्रकार अलग-अलग मान्यताओं के अनुसार गज़ल शब्द के अलग-अलग अर्थ निकाले जाते हैं।

गज़ल को परिभाषित करते हुए रामचन्द्र वर्मा द्वारा संपादित 'देवनागरी उर्दू- हिंदी कोष' में लिखा गया है - "गज़ल संज्ञा स्त्री - (अ) फारसी और उर्दू में एक प्रकार की कविता, जिसमें एक वजन और काफीये के अनेक शेर होते हैं और प्रत्येक शेर का विषय प्रायः एक दूसरे से स्वतंत्र होता है।"¹

चंद्रसेन विराट ने गज़ल को परिभाषित करते हुए लिखा है - "मेरी नजर में गज़ल एक ऐसी छंदोबद्ध काव्य रचना है जिसमें कवि को हर शेर में विभिन्न कथ्य प्रतिपादित करने की छूट है तथापि संपूर्ण काव्य रचना में एक विशिष्ट छंद विधान का अनुशासन पालित है एवं एक साथ सांस्कृतिक भावमयी संप्रेषण युक्त रससिक्त भावव्यंजना अनुस्यूत है।"²

गज़ल की संरचना की अगर बात की जाए तो गज़ल के प्रमुख अंगों में शेर, मतला, मिसरा इनका विशेष रूप से महत्व होता है। 'शेर' दो पंक्तियों का एक छंद होता है। शेर की प्रत्येक पंक्ति को मिसरा कहा जाता है। शेर अपने आप में एक स्वतंत्र सार्थक इकाई होती है जिसका अभिव्यक्ति की दृष्टि से स्वतंत्र अस्तित्व होता है। यदि गज़ल में से किसी शेर को अलग भी कर दिया जाए तो भी उसका अपना विशिष्ट अर्थ स्वयं में पूर्ण होता है। वास्तव में शेर अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है केश। जिस प्रकार काले सुंदर केश किसी स्त्री के सौंदर्य को पूर्ण बनाते हैं वैसे ही शेर भी गज़ल को परिपूर्ण बनाते हैं बिना शेर के गज़ल की कल्पना भी नहीं की जा सकती। गज़ल का वह पहला शेर जिससे गज़ल की शुरुआत होती है उसे मतला कहा जाता है। इसकी दोनों पंक्तियों में काफिया और रदीफ पाया जाता है। काफिया से अभिप्राय शेर में आने वाले उन शब्दों से है जिनका प्रयोग तुक

मिलाने के लिए किया जाता है। जबकि रदीफ़ से आशय शेर के अंत में आने वाले उन शब्दों से है जिनकी पुनरावृत्ति की जाती है। रोहिताश्व अस्थाना के अनुसार “गज़ल के ‘शेरों’ के अंत में जिन शब्दों की पुनरावृत्ति की जाती है उन्हें रदीफ़ कहते हैं।”

इसी प्रकार गज़ल का एक महत्वपूर्ण अंग मकता भी होता है। मकता से अभिप्राय गज़ल के उस शेर से होता है जिससे गज़ल की समाप्ति होती है और जिसमें कवि या शायर अपना नाम या उपनाम लगता है। सरदार मुजावर के अनुसार - “गज़ल का वह शेर मकता कहलाता है जो अंतिम होकर जिसमें गज़लगी अपना नाम या उपनाम लगता है। यह गज़ल का अंतिम शेर होता है जिसमें अधिकांश कवि गण या शायर अपने उपनाम या तखल्लुस का भी प्रयोग करते हैं”

गज़ल एक ऐसी साहित्यिक विधा है जो अपने कलेवर की संक्षिप्तता, अभिव्यक्ति की भाव- गंभीरता और अपनी संगीतात्मकता तथा कम शब्दों में अधिक भावाभिव्यक्ति के कारण गागर में सागर भरने की उक्ति को चरितार्थ करती है। अपनी इसी सामर्थ्य एवं विशेषता के आधार पर हिंदी साहित्य में भी गज़ल को एक लोकप्रिय विधा के रूप में अपनाया गया है। हिंदी और उर्दू गज़ल में जो मुख्य अंतर दृष्टिगोचर होता है वह भाषा ही दृष्टि से दिखाई पड़ता है। उर्दू गज़ल में जहां फारसी, अरबी के शब्दों का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है वही हिंदी गज़ल में हिंदी के शब्दों का प्रयोग बहुतायत रूप में किया जाता है। हिंदी गज़ल के उद्भव और विकास पर यदि दृष्टि डाली जाए तो सबसे पहले हिंदी गज़ल का आरंभ अमीर खुसरो से माना जाता है। अमीर खुसरो हिंदी साहित्य के आदि कवियों में आते हैं। उन्होंने ऐसी गज़लें लिखीं जिसमें एक मिसरा फारसी का और दूसरा हिंदी में था

“जहाले मिस्की मकुन तफागुस
दुराए नैना बनाए बतिया
किताबे हिजरा ना दरमे जां
ना लेहू काहे लगाए छतिया”³

हिंदी गज़ल की यह परंपरा आदिकाल से विकसित होती आधुनिक काल तक आ पहुंची है। इन वर्षों में हिंदी गज़ल में विषय एवं भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से बहुत परिवर्तन आया है। उर्दू गज़ल की इश्क और प्रेम की सीमित परिधि से निकल कर आज हिंदी गज़ल ने अपनी सामाजिक प्रतिबद्धताओं को भी सामने लाने का प्रयास किया है।

रोहितश्व अस्थाना के अनुसार - “हिंदी गज़ल आज पतली हथेलियां पर चित्रित मेहंदी की दंत कथा नहीं अपितु भाषा के भोजपत्र पर अंकित विप्लव का बीज मंत्र है”⁴

हिंदी गज़ल ने समस्त जनसाधारण के दुख, तकलीफ, पीड़ा को अभिव्यक्ति का विषय बनाया है -

“दहशत भरी हुई है फिजाओं में देखिए
कैसे जहर घुला हुआ है हवाओं में देखिए
थरथरा रही है जमीं, आसमान है चुप
एक डर छुपा हुआ है निगाहों में देखिए”⁵

आधुनिक हिंदी गज़ल में सामाजिकता एवं सामाजिक संवेदनात्मक अभिव्यक्ति एक महत्वपूर्ण विषय है क्योंकि आज की गज़लें केवल प्रेम दर्द या सौंदर्य तक सीमित नहीं हैं अपितु यह समाज की सच्चाइयों उसकी विडंबनाओं और समाज के संघर्ष को भी स्वर देती हैं। हिंदी गज़ल मानवीय मूल्य की स्थापना तथा एक समृद्ध और सशक्त समाज के निर्माण में अपनी भूमिका के दृष्टि से सार्थक और सशक्त प्रयास करती हुई सी प्रतिबिंबित होती है। वह अपनी सामाजिक संवेदनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से समाज की पीड़ा, असमानता, गरीबी, भ्रष्टाचार जैसे विषयों को कोमलता के साथ-साथ गहरे रूप में प्रस्तुत करती है। और न केवल इन गज़लों के माध्यम से हिंदी शायरों ने अपनी भावनाओं को जाहिर किया है वरन् समाज को आईना दिखाने का कार्य भी किया है। हिंदी की गज़लें संघर्षरत मानव में आशावादिता को प्रसारित करती हैं-

“इस नदी की धार से ठंडी हवा आती तो है
नाव जर्जर ही सही लहरों से टकराती तो है
एक चिंगारी कहीं से दूँड लाओ दोस्तों,
इस दिए में तेल से भीगी हुई बाती तो है”⁶

हिंदी के प्रसिद्ध गज़लकारों में गोपाल दास नीरज, दुष्यंत कुमार, अदम गोंडवी, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना एवं कुमार विश्वास की गज़लें अत्यंत प्रभावशाली हैं जो अपनी संवेदनाओं से समाज को प्रभावित एवं उनकी भावनाओं को आंदोलित करती हैं। इनकी गज़लें समाज, राजनीति तथा व्यक्तिगत जीवन से जुड़े अनुभवों को प्रमाणिकता के साथ अभिव्यक्त करने का प्रयास करती सी प्रतीत होती हैं। आज हिंदी गज़ल ने भ्रष्टाचार एवं राजनीतिक विडंबना, नेताओं के खोखले वायदे और आम आदमी की पीड़ा, शहरी जीवन की भाग दौड़, बनावटीपन इन सभी पर व्यंग प्रस्तुत किया है। आज की हिंदी गज़लें सांप्रदायिक सौहार्द एवं मानवता का संदेश भी देती हैं। इस संदर्भ में गोपाल दास नीरज का यह शेर दृष्ट्य है-

“हाथ मिले और दिल ना मिले

ऐसे में नुकसान रहेगा

जब तक मंदिर और मस्जिद हैं

मुश्किल में इंसान रहेगा”⁷

आम आदमी के जीवन में आई तकलीफों के लिए इन गज़लों में गहरी संवेदनाएं दिखाई पड़ती है-

“रोज होती है यहां हलचल कोई

टूटा है आईना हर पल कोई

राह भटके हुए इन परिंदों के लिए

ढूंढना होगा नया जंगल”⁸

समकालीन हिंदी गजलकारों में जहीर कुरैशी भी काफी लोकप्रिय रहे हैं। उन्होंने उर्दू गज़ल के स्थान पर हिंदी गज़ल को अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में चुना। एक मुस्लिम कवि होते हुए भी हिंदी गज़ल को लिखना उनकी हिम्मत को दर्शाता है। उन्होंने हिंदी गजल के माध्यम से व्यवस्थाओं से लड़ने की तथा उसका विरोध करने की हिम्मत दिखाई है।

वे कहते हैं -

“किस्से नहीं है यह किसी बिरहन की पीर के,

यह शेर है अंधेरे से लड़ते जहीर के।”⁹

समाज और पर्यावरण एक दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। लेकिन वर्तमान समय में पर्यावरण की सुरक्षा के लिए समाज आंखें मूंदे हुए अपने जिम्मेदारी से दूर होता जा रहा है। हिंदी गज़ल में पर्यावरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को कवि ने इन शब्दों में अभिव्यक्त किया है-

“बदबू देते हैं पवन के झोंके

उड़ते ऊंचे विमान रोते हैं।”¹⁰

ऐसे ही वायु प्रदूषण की समस्या को भी सामने लाने का प्रयास हिंदी गजल में किया गया है -

“धुंध का वातावरण है इन दिनों,

कैद कोहरे में किरण है इन दिनों।”¹¹

प्रकृति से जुड़ी अपनी पीर को जहीर कुरैशी जी इन शब्दों में अभिव्यक्ति देते हैं-

“जिसकी शीतल शाह में बैठकर विश्राम लूं

इस शहर में एक भी ऐसा कोई तरुवर नहीं।”¹²

समाज और राजनीति एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। भले ही दोनों विषय अलग-अलग प्रतीत होते हैं किंतु हमेशा से ही राजनीति समाज को तथा लोगों के जीवन को प्रभावित करती रही है इसलिए सामाजिक संदर्भों और सामाजिक प्रतिबद्धताओं की दृष्टिकोण से हिंदी गज़लकारों ने राजनीति के विषयों पर भी यथार्थ को सामने लाने का प्रयास किया है -

“जब से गठबंधन की सरकारों का आया है रिवाज

जो इधर थे अचानक ही उधर होने लगे।”¹³

अंत में निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि हिंदी गज़ल की एक दीर्घ परंपरा रही है। तथा आधुनिक समकालीन गज़ल के क्षेत्र में दुष्यंत कुमार, जहीर कुरैशी, गोपालदास नीरज, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना आदि गजलकारों ने सामाजिक यथार्थ की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से हिंदी गज़ल परंपरा को लोकप्रियता के शिखर पर पहुंचाने का कार्य किया है। इन सभी की गजलों में चिंतन पक्ष एवं शिल्प पक्ष के साथ-साथ भाव पक्ष का भी उत्कर्ष दिखाई पड़ता है। इसी बात से प्रेरणा लेकर गई युवा कवि हिंदी गज़ल के क्षेत्र में पदार्पण कर रहे हैं और सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति के साथ नए संस्कार एवं नए तेवर से हिंदी गजल को समृद्ध बनाकर हिंदी गज़ल को हिंदी की एक मुख्य विधा के रूप में स्वीकृति एवं पहचान प्रदान कर रहे हैं।

संदर्भ सूची

- 1- संपादक -रामचन्द्र वर्मा, देवनागरी उर्दू-हिन्दी कोष, संस्करण-1948, पृष्ठ संख्या- 107
- 2 डॉ० सरदार मुजावर. *हिंदी गज़ल- गज़लकारों की नजर में*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ संख्या -31
- 3 अमीर खुसरो- भावनात्मक एकता के अग्रदूत, डॉ० अशोक कुमार भट्टाचार्य के लेख से, संपादक- मलिक मोहम्मद, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ संख्या-61,
- 4 रोहिताश्व अस्थाना, हिंदी गजल का उद्भव एवं विकास, पृष्ठ संख्या -18
- 5 सरदार मुजावर. *हिंदी गजल वर्तमान दशक*, वाणी प्रकाशन, संस्करण-2014, पृष्ठ संख्या- 141
- 6 दुष्यंत कुमार. *साये में धूप*, <https://kavitakosh.org>

com/kavya/kavya&charcha/hindi&diwas&special&this&is&top&5&ghazal&poets&of&hindi\page4

- 8 दीक्षित दनकौरी. *गजल दुष्यंत के बाद*, भाग-2- भूमिका से.
- 9 जहीर कुरैशी, *चांदनी का दुख*, पराग प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ संख्या- 64
- 10 संपादक प्रणय, शरद संरचना गजल खंड- 3, पंकज बुक्स, पृष्ठ संख्या- 104.
- 11 हरे राम नेमा समीप, *समकालीन हिंदी गजलकार- एक अध्ययन*, भावना प्रकाशन, पृष्ठ संख्या- 78.
- 12 जहीर कुरैशी, *समंदर ब्याहने आया नहीं है*, श्वेतवर्णा प्रकाशन, पृष्ठ संख्या- 55.
- 13 जहीर कुरैशी, *बोलता है बीज भी*, प्रतिश्रुति प्रकाशन, कोलकाता, पृष्ठ संख्या- 65.



Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.